ज्योतिष शास्त्र में गण्डमूल नक्षत्र.....

पुराणों में गण्डमूल नक्षत्र.....

पुराणों में अनेक स्थानों पर गंडांत नक्षत्रों का उल्लेख किय गया है |

रेवती नक्षत्र की अंतिम चार घड़ियाँ ,अश्वनी नक्षत्र की पहली चार घड़ियाँ गंडांत कही गई हैं |

मघा ,आश्लेषा ,ज्येष्ठा एवम मूल नक्षत्र भी गंडांत हैं | विशेषतः ज्येष्ठा तथा मूल के मध्य का एक प्रहर अत्यंत अशुभ फल देने वाला है |

इस अवधि में उत्पन्न बालक /बालिका व उसके माता -पिता को जीवन का भय होता है | गंडांत नक्षत्रों को सभी शुभ कार्यों में त्याग देना चाहिए | 27/28 वें दिन उसी नक्षत्र में गण्डमूल दोष की शांति कराने पर दोष की निवृति हो जाती है |

स्कन्द पुराण के काशी खंड में सुलक्षणा नाम की कन्या का वर्णन है जिसका जन्म मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ था तथा उस बाला के माता -पिता दोनों का देहांत उस के जन्म के कुछ समय के बाद ही हो गया था |

नारद पुराण के अनुसार मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण को छोड़ कर शेष चरणों में तथा ज्येष्ठा नक्षत्र के अंतिम चरण में उत्पन्न संतान विवाहोपरांत अपने ससुर के लिए घातक होती है |

ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या अपने जेठ के लिए तथा विशाखा में उत्पन्न कन्या अपने देवर के लिए अशुभ फल का संकेत कारक होती है |

दिन में गंडांत नक्षत्र में उत्पन्न संतान पिता को रात्रि में माता को व संध्या काल में स्वयम को कष्ट कारक होता है |

ज्योतिष शास्त्र में गण्डमूल नक्षत्र...

फलित ज्योतिष के जातक पारिजात ,बृहत् पराशर होरा शास्त्र ,जातकाभरणं इत्यादि सभी प्राचीन ग्रंथों में गंडांत नक्षत्रों तथा उनके प्रभावों का वर्णन दिया गया है।

अश्वनी ,आश्लेषा ,मघा ,ज्येष्ठा ,मूल तथा रेवती नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र हैं

अश्वनी नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तो पिता को कष्ट तथा अन्य चरणों में शुभ होता है |

आश्लेषा नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तो शुभ ,दूसरे में धन हानि ,तीसरे में माता को कष्ट तथा चौथे में पिता को कष्ट होता है |यह फल पहले दो वर्षों में ही मिल जाता है

मघा नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तो माता के पक्ष को हानि ,दूसरे में पिता को कष्ट तथा अन्य चरणों में शुभ होता है |

ज्येष्ठा नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तो बड़े भाई को कष्ट ,दूसरे में छोटे भाई को कष्ट, तीसरे में माता को कष्ट तथा चौथे में पिता को कष्ट होता है| यह फल पहले वर्ष में ही मिल जाता है |

ज्येष्ठा नक्षत्र एवम मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या अपने भाई के लिए घातक होती है

मूल नक्षत्र के पहले चरण में जन्म हो तो पिता को कष्ट दूसरे में माता को कष्ट तीसरे में धन हानि तथा चौथे में शुभ होता है |

मूल नक्षत्र व रवि वार के योग में उत्पन्न कन्या अपने ससुर का नाश करती है |यह फल पहले चार वर्षों में ही मिल जाता है

जातकाभरणं के अनुसार जन्म के समय मूल नक्षत्र हो तथा कृष्ण पक्ष की ३ ,१० या शुक्ल पक्ष की १४ तिथि हो एवम मंगल ,शनि या बुधवार हो तो सारे कुल के लिए अशुभ होता है l

मूल नक्षत्र के साथ राक्षस ,यातुधान ,पिता ,यम व काल नामक मुहुर्तेशों के काल में जन्म हो तो गण्डमूल दोष का प्रभाव अधिक विनाशकारी होता है |

रेवती नक्षत्र के चौथे चरण में जन्म हो तो माता -पिता के लिए अशुभ तथा अन्य चरणों में शुभ होता है |

अभुक्त मूल ज्येष्ठा नक्षत्र की अंतिम दो घटियाँ तथा मूल नक्षत्र की आरम्भ की दो घटियाँ अभुक्त मूल हैं जिनमें उत्पन्न बालक , कन्या , कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं |

इनकी शान्ति अति आवश्यक है |